किंग
कॉमिक्स
मूल्य 7.00 संख्या 10
आलराऊंडर
वक्र
वक्र सीरीज
Ankur's UPload
VERMA

जब-जब जुर्म की दुनिया से निकल-कर अपराध रूपी पेड़ की जड़ें समाज में अपने पांव पसारने की कोशिश करती हैं।

तब-तब कोई न कोई जांबाज अपनी जान की परवाह किए बगैर निकल पड़ता है अपने मजबूत इरादों की धार से जुर्म की जड़ों का सफाया करने।

और जब जुर्म के पेड़ की जड़ें खेल जैसी पवित्र भावना के क्षेत्र में भी अपने पग पसारने लगीं ... जब अपराध की दुनिया के लोगों ने खिलाड़ियों की जिंदगी से करना शुरू किया खिलवाड़ ... तो उनको चुनौती देने आना ही पड़ा एक जांबाज खिलाड़ी को ... जो था ...

ALFA INVESTIGATORS

आलसंडर

(One Sandesh)

Chowk Purnia Road

SRI GANGANAGAR 335001

आलसंडर
लेखक-टीकाराम
Tikaram

आलसंडर चित्रांकन पेंसिल - धीरज फिनिश वर्मा

आलसंडर सम्पादक-
चितक मोहन

वक्र ... जिसकी दुश्मनी है उन दरिन्दों से जो "जीवन" को समझते हैं "खेल"

आलसंडर स्याही सहायक-
राजेन्द्र धोनी

वक्र ... जान की भी बाजी लग सकती है लिए जो खेल को समझ हैं जीवन !

तेरी हार का मतलब है ... तेरी जिंदगी का खेल खत्म !

धाँय

SIXER

राजनगर की झोपड़-पट्टी में बनी एक दादू साइकिल वर्क्स की दुकान पर गुमसुम-सा बैठा देखा जा सकता था एक मासूम लड़के को।

दादू साइकिल वर्क्स

लड़के की गुमसुम उदासीनता के ज्वालों की चादर में छिपे थे बड़े-बड़े अरमान।

वे अरमान जो शायद आसमां से ऊंचे थे।

खेलों के प्रति आगे दूर उसके अरमानों के पक्षी को आसमां में उड़ा ले जाता था··· दुकान में लगा एक हिंसा-पिटा टेलीविजन —

यह आवश्यक का तीसरा चौक्का।

टी.वी. देखने की हिम्मत वह तभी जुटाता था, जब उसका मालिक दुकान में नहीं होता था।

अंदर ही अंदर अपने ख्याल पर मुस्करा देता वह।

एक दिन··· मेरा खेल भी टेलीविजन पर आएगा। तब आगे झोपड़ी वाले दांतों तले ऊंगली दबा लेंगे।

और तभी उसके गाल पर पड़ता था एक झन्नाटेदार तमाचा, जो उसके ख्यालों की इमारत पल भर में ढहा देता —

थप्पड़··· जो सूचक था दुकान के मालिक के आगमन का।

लकवा-सा मार जाता उस जानदार को ... फिर यूं झुका लेता वह मानो अपराध करते हुए पकड़ा गया हो।

क्यों बे गधे, दुकान के सामने इतनी गाड़ियां खड़ी हैं... उनमें पंचर लगाने की बजाए टी-वी- देख रहा है।

द... दादू, माफ कर दो।

खून के आंसुओं का घूंट पीकर रह जाता वह!

फिर उन्हीं हाथों में आ जाते पेंचकस, प्लास और पंचर ट्यूब।

जरा आ दुकान से इधर-उधर क्या हो जाओ ... साब जी टी-वी- तो ऐसे देखने लगते हैं जैसे इसका बाप मर गया हो।

ट्यूब में बने पंचर रूपी जख्म
को तो भर देते थे उसके हाथ, पर अपने दिल में मालिक के शब्दों से बने जख्मों को वह अपने ही आंसुओं का लेप लगा भरने की असफल कोशिश करता था

खाली वक्त ... यूं तो न होता था उसके पास पर ... अगर होता भी तो खाना खाने के वक्त।

तब दुकान के कोने में अपनी थाली ले बैठ जाता वह –

और सबसे पहले भोग लगाता दीवार पर अखबारों से काटकर चिपकाए खिलाड़ियों के चित्रों को।

लो तुम भी खाओ ... और देखना एक दिन में भी तुम्हारे जैसा आल राउंडर बनूंगा।

सिर्फ और सिर्फ ये ही होते थे वे पल जब वह दादू की सारी जली-कटी बातें भूल जाया करता था।

खाना खत्म करते ही उसे दबाने पड़ते थे, तब तक अपने मालिक दादू के पांव जब तक वह गहरी नींद में न सो जाता।

आराम-आराम से दबा ... इतनी कठोरता से दबा रहा है कम्बख्त जैसे कि पांव नहीं मेरा गला दबा रहा हो।

काश! मैं तेरा गला ही दबा सकता।

लड़का इंतजार करता था मालिक के सोने का बड़ी बेसब्री से।

जैसे ही दादू के खर्राटे कमरे में गूंजने लगते –

खर्र खर्र

खड़का --- बिल्ली की भाँति चुपके से दबे पांव बढ़ता दरवाजे की ओर –

दरवाजा इतनी आहिस्ता से खोलता कि क्या मजाल वह चूं-चर्र भी बोल जाए।

और -- निकलते ही इतनी तेजी से वह भागता मानो उड़कर कहीं पहुंचना चाहता हो।

थोड़ी ही देर बाद वह --- होता था एक पेड़ पर –

जहां से उसे स्पष्ट दिखता था अजनगढ़ स्टेडियम में यदा कदा होने वाला "वनडे" मैच।

जाने वह दिन कब आएगा जब मैं भी इस स्टेडियम में खेलूंगा।

मैच चाहे हो या न हो वह बिना कोई नागा किए हर रोज उस स्टेडियम के रात में दर्शन किया करता था।

उस दिन उसकी जिंदगी में भयंकर मोड़ आया जब सुबह-सुबह ही उसके गाल लाल कर दिये दादू के झनझनाते थप्पड़ ने —

पटाक

आह

यह थप्पड़ उसकी किस नादानी का इनाम था न जान पाया वह नादान।

बोल ··· बोल, वह दुकान के बाहर लगा सूखा पेड़ किसने काटा।

मैंने नहीं काटा दादू!

यह शब्द बोलने के लिए जैसे उसने अपनी सारी ताकत जुटाई थी।

उसकी आंखों के आगे कर दिया दादू ने लकड़ी का बना बल्ला —

यह बैट तेरे पास कहां से आया वक्कू! बोल नहीं तो कान उखाड़ लूंगा।

आ SSS यह मेरा नहीं छंगू का है ··· दादू उसने मेरे पास अपने बाप के डर के कारण रख दिया था।

चुप बे यह बैट मुझे उसी कटे पेड़ की लकड़ी का बना हुआ लग रहा है।

दादू ने बल्ले पर छिड़क दिया तेल।

तेरा नहीं है ··· नहीं है न तेरा।

तीली सुलगते ही लड़के ने आंसुओं की गंगा बहा दी।

नहीं दादू ··· मत जलाओ उसे छंगू मुझसे मांगेगा।

कह दियो मैंने जला दिया। अब तू भी हाथ ताप ले इस पर।

जलती तीली की चिंगारी तेल में भीगे बैट पर पड़ी।

नहीं!

उसे यूं लगा मानो बैट नहीं उसका तन बदन फुंक रहा है।

लड़के के चेहरे पर एकाएक ही उभर आए नफरत और घृणा के भाव –

आंसू सूखने लगे उसके।

क्रोध की ज्वाला इतनी भड़क चुकी थी अंदर कि मुट्ठियां भिंच गईं।

दादू की एक झड़प पर उगमगाने वाले कदम उस पल दृढ़ता से बढ़े।

आग की लपटों की परवाह न करते हुए उसका हाथ जल गया बेट पर –

उस आग से भी कहीं ज्यादा आग उसके नन्हें दिल में लग चुकी थी।

वर्षों से जो क्रोध का ज्वालामुखी आज तक वह अपने सीने में दफन किए था, फैट पड़ा था आज।

धड़

दादू ... बहुत रह लिया मैं तेरी गुलामी की जंजीरों में ... आज इसी वक्त इसी पल ... तोड़ रहा हूं गुलामी की जंजीरें।

पूरी शक्ति से घुमाया बेट और कर दिया विरोध का ऐलान –

दादू ... खून की धार देख चीत्कार उठा।

अरे, पकड़ो कोई उस शैतान को वह मेरा सिर फाड़कर भागा जा रहा है।

उसके पीछे लग गई मानो सारी झोपड़-पट्टी की पब्लिक।

पकड़ो पकड़ो

दादू का सिर फोड़ दिया बक्कू ने।

मुझे यह बल्ला बचाना है वर्ना छंगू को क्या जवाब दूंगा।

वह जलता बैट उस वक्त उस मासूम के हाथ में गुलामी की जंजीरें तोड़ने वाले क्रांतिकारियों की मशाल-सा लग रहा था।

नदी के पुल पर ठिठक-कर सिर्फ एक पल के लिए रुका वह –

अगले पल तो वह कूद चुका था उस नदी की ठहाके मारती लहरों के बीच –

छपाक

अब बच जाएगा जलने से बैट!

पीछा करने वालों के दिल न थे इतने मजबूत कि कूद सकें नदी में।

चलो वापिस अगर बक्कू फिर कभी झोपड़-पट्टी में दिखाई दे तो टांगें तोड़ देंगे उसकी।

बच गया लल्ला!

सबके वहां से विदा होते ही स्टंप पर आ गया वह ... हाथ में थमा बल्ला अब तक कोयला बन सुरमुरा चुका था।

मुबक ... मुबक ... अब क्या होना ... छंगू का बैट तो अब गया आने का साला।

बैट की चिन्ता थी उसे ... अपने हाथ की नहीं, जो जलते हुए बैट को पकड़ने से स्वयं भी जल गया था काफी।

ईंटों के पायों पर खड़ा वह जंग लगा कैंटर सालों से अपने बिछड़े टायरों के वियोग में हर रोज बूढ़ा हो रहा था।

उसी कैंटर की छत पर नजर आ रहा था एक बच्चा।

फलक झपकते ही कैंटर के अंदर था वह।

अचानक ही चमक उठीं उसकी आंखें –

मुझे पता था बक्कू तू यहीं मिलेगा... क्योंकि यही तो वह जगह है जहां मैं अपने बाप से और तुम अपने दादू से अच्छ खेल खेलते हैं।

छंगू---!

यह देख यह क्या है मेरे हाथ में?

अरे क्रिकेट की गेंद कहां से मिली?

एक कूड़ेदान से। मैं रोज की तरह कूड़ेदानों से थैलियां बीन रहा था कि दिख गई थी। थोड़ी फटी है गेंद पर अपने काम आ जाएगी।

एक पल के लिए बक्कू के वीरान नेत्र हजार वॉट के बल्ब की भांति चमके –

दूसरे ही पल ... हजार वॉट के बल्ब से, नेत्रों की चमक जीरो वॉट के बल्ब की बुझी-सी रोशनी में बदल गई।

ला मेरा बैट निकाल। खेलते हैं।

बैट!

और फिर खूब फूट-फूट कर रोया वह मासूम।

दिल भर आया छंगू का भी जब देखी उसने बैट की हालत –

ओह! नहीं यह तो जलकर कोयला हो गया है।

छंगू मैं तुझे नया बैट ला दूंगा।

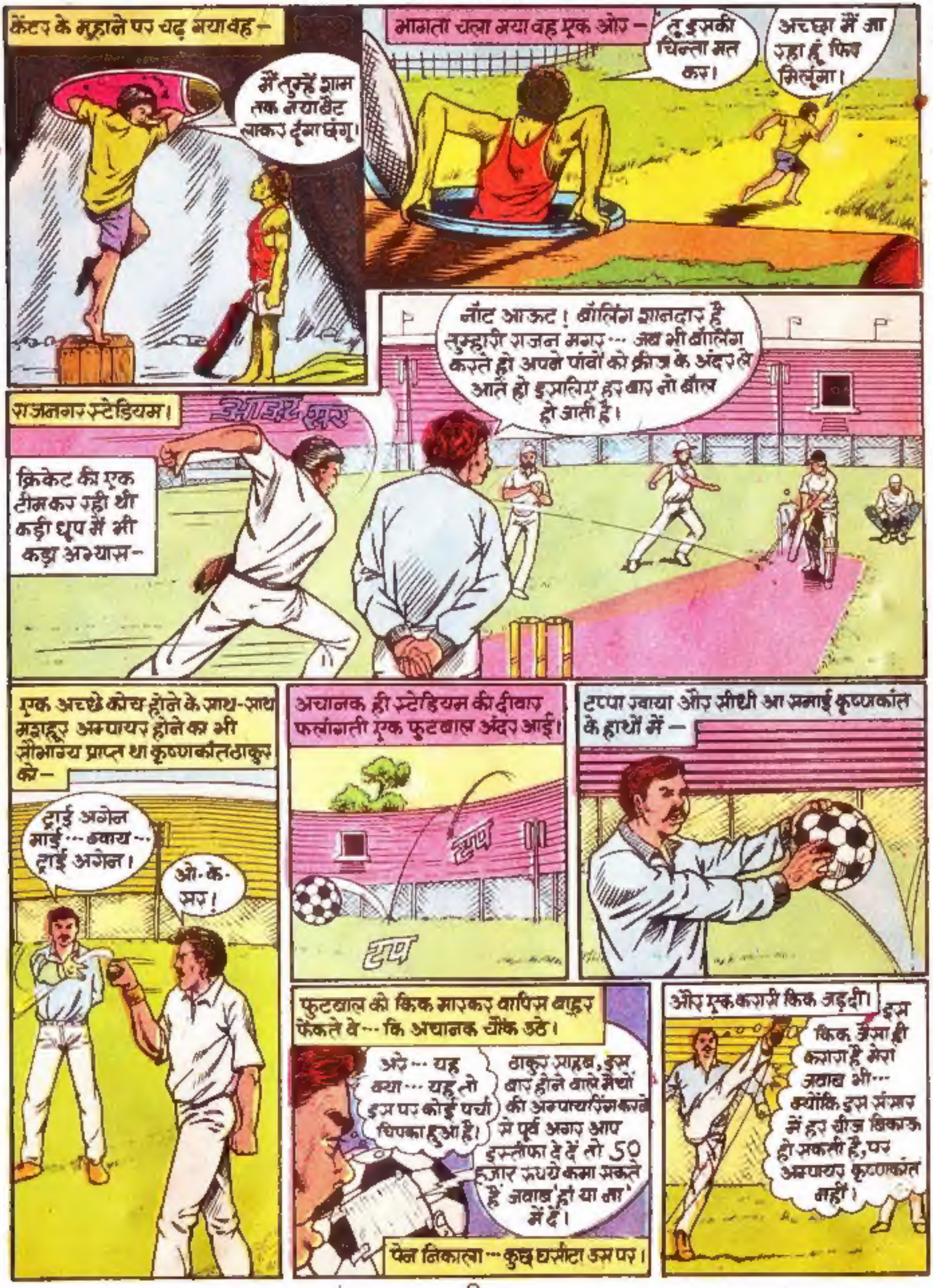
सेंटर के मुहाने पर चढ़ गया वह –
मैं तुम्हें शाम तक नया बैट लाकर दूंगा छंगू।
भागता चला गया वह एक ओर –
तू इसकी चिन्ता मत कर।
अच्छा मैं जा रहा हूं फिर मिलूंगा।
नॉट आऊट ! बॉलिंग शानदार है तुम्हारी राजन मगर ... जब भी बॉलिंग करते हो अपने पांवों को क्रीज के अंदर ले आते हो इसलिए हर बार नो बॉल हो जाती है।
राजनगर स्टेडियम।
क्रिकेट का एक टीम कर रही थी कड़ी धूप में भी कड़ा अभ्यास –
एक अच्छे कोच होने के साथ-साथ मशहूर अम्पायर होने का भी सौभाग्य प्राप्त था कृष्णकांतठाकुर को –
टाई अगेन माई ... क्याय ... टाई अगेन।
ओ-के-सर!
अचानक ही स्टेडियम की दीवार फलांगती एक फुटबाल अंदर आई।
टपका उचाया और सीधी आ समाई कृष्णकांत के हाथों में –
फुटबाल को किक मारकर वापिस बाहर फेंकते वे ... कि अचानक चौंक उठे।
अरे ... यह क्या ... यह तो इस पर कोई पर्चा चिपका हुआ है।
ठाकुर साहब, इस बार होने वाले मैचों की अम्पायरिंग करने से पूर्व अगर आप इस्तीफा दे दें तो 50 हजार रुपये कमा सकते हैं जवाब 'हां या ना' में दें।
पेन निकाला ... कुछ घसीटा उस पर।
और एक करारी किक जड़ दी।
इस किक जैसा ही करारा है मेरा जवाब भी ... क्योंकि इस संसार में हर चीज बिकाऊ हो सकती है, पर अम्पायर कृष्णकांत नहीं।

स्टेडियम से शहर आ टपका उसकी फुटबाल उससे पूर्व ही दो हाथों ने थाम लिया उसे।

हाथों का स्वामी था वक्र।

शायद यह फुट... और यह कागज कैसा चिपका है?

उन अक्षरों ने नन्हें से दिमाग में भी फुलझड़ियां-सी छोड़ी थीं।

...धमाके से गूंजे थे-

विस्फोट-सा हुआ था।

कोई महान् अम्पायर को... अम्पायरी में हस्तक्षेप देने की धमकी और चालक दे रहा है... और उन्होंने ना सिरफिरा इंकार कर दिया उसकी बात मानने से!

तुरन्त उसके हाथों में जेब में पड़ा पैन का पिंजरा बाहर आया।

अम्पायर... की ना से न सिर्फ उस पर हमला हो सकता है... बल्कि उसको धमकी देने वाले का पता भी नहीं चलेगा...!

और उसने "ना" काटकर "हां" लिख दिया।

अचानक ही उछल पड़ा वक्र एक मुर्गाहट भूल।

ऐ छोकरे... वह फुटबाल मुझे दे दे!

यही शायद धमकी देने वाला पत्र... अम्पायर को धमकी देने वाला तो कोई खिलाड़ी जैसा होना चाहिए।

और यह तो खिलाड़ी नहीं लगता।

ओ मच्छर... जल्दी दे फुटबाल वर्ना... वक्र चाचा को तेरी गर्दन रेतने में जरा भी रहम नहीं आएगा।

फुटबाल चाहिए।

ये जरूर कोई गुण्डा है... जिसने किसी से यह बॉल अंदर फिंकवाई होगी।

यह ले फुटबाल।

BOOK

कुरता लाच उठी चक्कू के मुख पर।

छोकरे — मत कर फुटबाल का सत्यानाश वर्ना — चक्कू तुझे फाड़कर रख जाएगा।

फुर्ती से फुटबाल रख हट गया चक्कू।

उछलते हुए चक्कू का पांव पड़ा फुटबाल पर।

CANTEEN

और — बेचारा सड़क पर फैल गया।

फुटबाल फिर चक्कू की ऊंगलियों पर खेली —

CANTEEN

हा-हा-हा चक्कू चाचा — एक शर्त पर — अब तो मैं तुम्हें गेंद दे सकता हूं। बताओ इस पर कागज चिपकाने वाला कौन है?

जवाब तुझे मैं नहीं मेरा चाकू देगा।

चाकू से बचने की तेजी से झुका चक्कू।

पर — सनसनाते चाकू ने टक्कर मार ही दी फुटबाल के।

और चीर दिया पट फुटबाल का।

आउच — अगर यह चाकू फुटबाल के नहीं लगता तो अवश्य ही मेरी जान निकाल देता।

फुटबाल के फटते ही कागज छूटकर हवा में लहराया–

फुटबाल गई
सो गई तू तो मत
जा प्यारे कागज!

और उसकी तरफ लहरा चुका था चक्कू का शरीर भी।

वक्रू ने जीते की सी फुर्ती से फटी हुई फुटबाल उठाई!

अरे! इस का चिपका कागज कहां उड़ गया?

कागज लेकर तो कब का फरार हो चुका था चक्कू चाचा–

उस छोकरे ने तो नाक में दम ही कर दिया था।

ठीक पड़ा छक्कू वक्र को खाली हाथ देख–

आ गये वक्र! तुमने इतनी देर कहां लगा दी

गया तो बैट लेने ही था पर नहीं ला पाया।

जवाब में बयान कर दी वक्रू चाचा कैसी छक्का उसने

फर वक्र— तूने पर्चे में "आ" की "मां" लिखकर अन्याय के लिए मुसीबत खड़ी कर दी।

और तब मुसीबत न खड़ी होती उस अन्याय की "आ" होती। अब कम से कम वह तो आगे आकर उसे इन्कार करवाना पड़ता है उसे।

इसी वक्त दूर कहीं एक इमारत में गूंज रही थी एक आवाज।

बेटे सेठ... तुम जानते हो फुटबाल का चैम्पियन कहलाना अमरीका कुरुपकीन को अमरीकी से हटवाने का झगड़ा क्यों कर रहा है?

हा हा-हा... चक्कू आम खा आम,... पेड़ मत गिन और सुन आज शाम यह 50 हजार डालरों वाला चैक इस धमा आइयो!

क्या सच? कुरुपकीन ने इन्कार कर दिया?

ओ नकाब वाले सेठ... आपको क्या इस कागज पर लिखा "हां" शब्द "ना" नजर आ रहा है।

उस... अपनी काली चादर गजलक के खुले आकाश पर फैला चुकी थी –

अगर कुरुपकीन की आंखों से कोशों दूर थी नींद –

आखिर वह कौन है जिसने मुझे आज फुटबाल के अंतिम खिलाड़ी का खिताब दिया।

जिसने कहा... टटोल ही रहे थे माइटर कि –

OH THANK YOU.

अचानक चौंक पड़े –

अं - यह इस कमरे में मेरे अलावा और कौन है?

खड़ा था सामने, अपने मैले कुचैले दांत निकाले हंसता हुआ चक्कू-

तुम --- कौन हो --- क्या लेने आए हो यहां ?

हा हा हा डर गए ?

चक्कू चाचा कहते हैं मुझे और तुम बीजवा मत !

उलट दिया उसने बैग --- नोटों की बारिश-सी हो गई मेज पर।

अरे मैं तुमसे कुछ लेने नहीं बल्कि कुछ देने आया हूं।

?

अगले ही पल पड़ा उसके गाल पर सीधे हाथ का एक सधा हुआ थप्पड़ –

यू बास्टर्ड --- मेरे इन्कार के बावजूद भी मेरे घर में मुझे जलीलने आ गए तुम।

हैरत के सागर में डूबे चक्कू ने फुर्ती से पर्ची निकाल उनकी आंखों के आगे कर दी –

इन्कार नहीं स्वीकार किया था तूने देख --- देख --- इस पर "हां" लिखा था तूने !

हिट विकट हुए खिलाड़ी की भांति देखते रह गये आइचर्य से वे।

नहीं --- ऐसा कैसे हो सकता है ?

अब ज्यादा चपड़ चूं की तो इस चाकू से आंतड़ियां निकालकर मेज पर रख दूंगा।

पेन और कागज उठाकर फटाफट इस्तीफा लिख कि तू आज से अन्यायी नहीं करेगा और कल अपने बैंक में हाजिर हो जाएगा।

नहीं, इन्होंने नहीं --- उस पर्ची पर मैंने "ना" ही लिखा था वह "हां" में कैसे बदल गया ?

Uploaded for RCJ Community by Ankur

उसी पल दरवाजे पर खड़ा नजर आया - वक्र।

उस "ना" को "हां" में मैंने बदला था अम्पायर साहब!

तू... छोकरे! तूने की थी वह हेराफेरी?

?

चाकू उछलता -

अब तो तेरी हेराफेरी की सजा तुझे देनी ही पड़ेगी छिंटकी!

तभी मेज खिसका दी वक्र ने।

अम्पायर साहब। आप फौरन पुलिस को फोन कीजए!

ढेन

विद्युत गति से बढ़ाया कृष्णकांत ने फोन की तरफ हाथ -

यह लड़का कौन है?

लेकिन इसका वार करने से पूर्व ही फेंक चुका था शिकारा साथ-कर चक्कू एक मोटी किताब।

हा-हा-हा फोन करेगा।

एक बार फिर चाकू संभाल वह आ गया बक के सामने –

हा-हा-हा छोड़े तेरी जिंदगी के दिन अब एंड समझ।

वार किया -- पर वार रुका भी –

चक्कू जी -- कभी-कभी मेज पर रखा गुलोब भी वार रोकने का कमाल देता है।

और वार करने का भी।

आ जा चक्कू – देख --- यह क्या है --- इसे ऐसे घुमाते हैं मैंने अपनी पंचर वाली दुकान के टी-वी- में देखा है।

झांझ उठा था चक्कू अपनी असफलता पर –

बहुत हो गया --- अब तो तेरी बोटी-बोटी काटकर रहेगी मेरे हाथों।

आ घुमाने के बाद ऐसा पछाड़ देते हैं।

बेचारा चक्कू अब न रोक सका अपने हलक से निकलने वाली चीख को।

आर्ट्स

धड़

जैसे ही जमीन से मिलन हुआ चक्कू के जिस्म का उसके हाथों पर उस दी चक्र ने मेज़ और खड़ा हुआ ऊपर।

चक्कू की दर्द भरी कराहों से गूंजने लगा कमरे का कोना-कोना।

बोल --- तुझे अम्पायर साब को पैसे देने किसने भेजा?

वह --- वह नकाबपोश है --- मैं नहीं जानता उसे।

उसने मुझे इस काम के लिए दो हजार रुपये दिये थे।

इसे कैसे पता कि मुझे किसी ने तलाक दिया था?

चक्र --- तुमने यह सब क्यों किया बेटा?

सुबह तक चक्कू रहा वहां था हवालात की हवा --

और चक्र ले रहा था ब्रेकफास्ट का मजा, अम्पायर कृष्णकांत के साथ।

अम्पायर साहब! मैंने उस कागज पर लिखे "ना" को "हां" इसलिए किया था कि जो आए उसमें ईमानदार का ईमान खरीदने वाला है उसकी असलियत सामने आ जाए।

रुक-रुक घटना सुनाता रहा गया चक्र उन्हें --

नहा --- एक सवाल और दागा कृष्णकांत ने।

और तुम --- स्टेडियम करने क्या आ रहे थे?

व --- वो --- मैंने सोचा स्टेडियम में इतने सारे लोग खेलते हैं। किसी का बैट उठा के आऊंगा --- फिर मैंने अपना इरादा त्याग दिया।

तुम्हें बैट चाहिए न?

अब नहीं चाहिए --- क्योंकि अब तक तो छंगू की मां उसे कई बार पीट चुकी होगी और मुझे भी हजारों गालियां दी होंगी उसने। अब मुझे बैट नहीं चाहिए।

चक्र का चेहरा फिर एक बार मुरझा गया अपनी ही बात पर।

वह पागलों के समान हंसने लगा। आज से पहले मानो इतनी खुशी उसे कभी न मिली थी।
चारों तरफ हर खेल का हर सामान मौजूद था वहां।
जहां उसे लेकर आया था कृष्णाकांत।
हाय रे इतने सारे खेल के सामान --- क्या मैं इनको हाथ लगा सकता हूं?
हाथ ही क्यों तुम इन सब चीजों से खेलोगे ये सब तुम्हारी हैं आज से।
क्या सच!
खुशी से फूला नहीं समा रहा था वह---
यह --- यह बैट बॉल मेरे हैं!
वर्षों से जो देख रहा था वह सपना आज उसे साकार होने के बावजूद भी सपना सा लग रहा था।
यह हॉकी भी!
फुटबाल भी!
ये बेडमिन्टन भी?
इतना सामान था वहां कि उससे संभाले न संभल रहा था।
एकाएक ही मौन धारण कर लिया था मायूसी ओढ़ ली उसने—
क्या हुआ --- तुम उदास क्यों हो गए अचानक?
मगर यह सब खेलना तो आता ही नहीं है अच्छी तरह।
अम्पायर कृष्णाकांत ने उसकी पीठ ठोंकी—
कृष्णाकांत के हाथ के नीचे से निकलकर जाने कितने खिलाड़ी खेलों की दुनिया में अपना नाम रोशन कर चुके हैं। और फिर तुझे तो मैंने स्वयं बनाने की ठान ली है --- हर खेल का आल राउंडर।
सच!
आल राउंडर

उसी वक्त दूर कहीं मेज पर जोर घूंसे के आतंक ने भूकम्प ला दिया –

मिस्टर नकाश !

तिलमिला उठा नकाबपोश सामने वाले की इस हरकत पर –

अपने हाथों पर काबू रखो कैप्टन गोर्की ! ये मत भूलो कि तुम मेरे सामने खड़े हो---।

मैंने सिर्फ उस-से काम के लिए तुम्हें 1 लाख रुपये दिए थे।

किसी के ईमान को खरीदना मामूली काम नहीं होता।

गोर्की के माथे पर नागवारी की शिकन उभरी–

मेरा काम अभी तक क्यों नहीं हुआ ? उस अम्पायर कृष्णाकांत का इस्तीफा अभी तक बोर्ड में क्यों नहीं पहुंचा ?

पहुंच जाएगा। शत है तो मैंने उसके यहां 1 लाख रुपये एक गुंडे के हाथों भिजवाये हैं।

और तुम्हारी भेजी दोनों चीजें आज पुलिस की हवालात की सैर कर रही हैं।

ओह नो !

ओह यस ! न यकीन हो तो यह अखबार पढ़ लेना।

यही फिर कभी मत करना जो तुमने अब किया है। यह बताओ-- मैंने क्या करना है ?

दांत पीस कर एक-एक शब्द बोला उसने –

वह ईमानदारी की मूर्ति अपना ईमान नहीं बेचती तो तोड़ दो उसे।

सचमुच खिलाड़ी के नाम पर कलंक हो तुम ...

झटाझट !

वेरी गुड शॉट वक्र ... तुम्हारी मेहनत और लगन अवश्य तुम्हें एक दिन बुलंदी पर ले जायेगी।

शुरू हो चुकी थी वक्र की प्रेक्टिस –

चलो वक्र अब घर चलने का वक्त हो गया।

नहीं सर ... आप जाइए मैं अभी बॉलिंग की प्रेक्टिस करूंगा।

Ankur's UPload

कृष्णकांत ने उठा ही था स्टेडियम से बाहर कदम...

GATE No 3

...कि घात लगाए गुंडे हरकत में आ गए—

अ/ISS

यही है अन्यायी कृष्णकांत!

पड़े हुए कृष्णकांत पर बरसाने लगे वे बेरहम गुंडे हाकियों पर हाकियाँ—

अ/ISS

खिलाड़ी आऊट है या नॉट आऊट इसका फैसला तू करता है।

और आज तेरी कितनी हड्डियां क्रिकेट से आऊट करनी हैं यह फैसला हमारे हाथ में है।

प्रतिदिन एक केस कमकर!

ख्वाब में ऐसा चेहरा दर्द से तिलमिला कर चीख़ उठा—

ERPO

अ/ISS

फिज़ां में गूंजी चीख़ सुनी थी चक्र के भी कानों ने—

अ/ISS

?

जिसकी आवाज़ उसके पांवों में—

यह तो कृष्णा सर की चीख़ है।

कुछ क्षणों को बेहोश होने की खातिर लेट गया वह चुपचाप कुएं में—

मन काबू करो!

हाकिया ने बड़ी चालाकी से बुलबुल को अपने जाल में फंसाया—

बच्चे, बर्फ की तह के नीचे घुस जाओ।

बुलबुल ने ऐसा ही किया।

हा हा हा! आखिर पीतल बाबा का कमाल कुमुद अब घुस चुकी है पिंजरे में अपने बाप के पास।

बड़का मालना यहां दंगा की ओर।

न हटा वह, न टस से मस न हुआ!

तब तक — जब तक कि वह अपने बहादुर समझ ... न चल जाए हाकिया बाबा।

स्वस्थ से स्वस्थ अपना बेहतर उठाया वह ने।

अरे अरे आप — ठीक तो हैं न? आइए।

उठाने की भरसक कोशिश की उसने कृष्णकांत को।

सर... सर मैं आपको हस्पताल ले चलूंगा।

मगर... वह मासूम अपने इसी प्रयास में लड़खड़ा कर गिर पड़ा –

बेहोशी की चादर ने अब उसे भी लपेट लिया था।

अगली सुबह होश की दुनिया में जब दोनों चौंके तो हास्पिटल के बेड पर पड़े पाया स्वयं को –

सर... आप कैसे है ?

सर - वे लोग... कौन थे ... जिन्होंने आप पर हमला किया था ?

मैं ठीक हूं। बस थोड़े बहुत जख्म हैं... एक पांव में फ्रेक्चर हो गया है... तुम कैसे हो ?

अब... आप राजनगर स्टेडियम में होने वाले मैच का डायरेक्ट टेलीकास्ट देख सकेंगे...

कृष्णकांत ने वक्र का सवाल मुस्कान में ही टाल दिया।

छोड़ो उन्हें वक्र। देखो टी. वी. पर आज का मैच शुरू हो रहा है।

राजनगर स्टेडियम दर्शकों से खचाखच भरा था—

दक्ष क्रिकेट क्लब और नायन क्रिकेट क्लब का मैच अब शुरू हो चुका है।

अतः कप खेल जगत के विख्यात अम्पायर श्री कृष्णकांत पर कुछ नुड़ों का इन्तजार न हुआ होता तो वे ही आज उपस्थित होने अम्पायरिंग के लिए मिस्टर खुराना की जगह।

पहला ओवर शुरू हुआ।

बैटिंग संभाले हैं नायन क्लब के कैप्टन ... मुकेश जो न सिर्फ अच्छे बैट्समैन हैं बल्कि अपनी टीम को भी काफी अनुशासित रखते हैं।

तेज गति गेंद फेंकी बेंद कैप्टन मोर्की ने कैप्टन मुकेश के लिए।

राइट आर्म की पहली ओवर कैप्टन मोर्की तेज-तेज के साथ फेंकने लगे आ रहे हैं।

कैप्टन मुकेश गेंद को हिट करना चाहते थे लेकिन इस...

—मगर—

... बाल उसके पूर्व ही आ पहुंची थी विकेट कीपर के हाथों में...

अवध की दूसरी ओवर ... फिर से लम्बा रनअप लिया।

बाल फेंकी!

ओह ... अरे यह क्या ... विकट कीपर ने ... बेहद फुर्ती का प्रदर्शन किया बाल पकड़ी।

आउट

अम्पायर ख़ुदड़ा का मृक का इशारा करती अंगुली ने साफ आऊट दे दिया।

टी॰ वी॰ पर मैच देखते हुए ... कृष्णकांत एकाएक ही चीख उठे।

ओह ... हवा में उड़ा कर रख दी तीनों किल्लियां!

एक झटके से उठ खड़ा हुआ लड़का --

वह आऊट नहीं था वक्र! उसका पांव क्रीज में ही था ... और ख़ुदड़ा ने उसे आउट दे दिया।

वक्र के कानों में पिघले शीशे की भांति पड़े थे कृष्णकांत के शब्द।

क्या हुआ वक्र नम्बर, चेहरे के भाव क्यों बदल गए अचानक?

जरा ... जरा में अभी आया।

क्या?

हवा हो लिया वह।

वक्र --- तुम कहां जा रहे हो?

क्रिकेट के मैदान में हाकी का खेल खेलने।

खोपड़ी घूम गई कृष्णकांत की।

क्रिकेट के मैदान में हाकी का खेल ?

जैसे ही समझ आया उन शब्दों का अर्थ कांप उठे वो -

व्हीलचेयर में दौड़ा दी अपनी व्हीलचेयर।

E.L.CURE

वह लड़का जरूर अब वहां कोई बवाल खड़ा करेगा।

याचना-सी कर बैठे वे डॉक्टर के आगे हाथ जोड़।

डॉक्टर साहब! प्लीज प्लीज मुझे फौरन इसी समय राजनगर स्टेडियम ले चलिए।

मगर आपकी टांग---

अरे--- आप इस तरह न घूमिये।

डॉक्टर, मेरी टांग को गोली मारिये--- अगर देर हो गई तो जाने कितनी टूटी टांगों पर आपको प्लास्टर बांधना पड़ सकता है अतः प्लीज ---प्लीज जल्दी कीजिए।

Ankur's UPload

उस वक्त राजनगर स्टेडियम का हर दर्शक रह गया हैरान।

सचमुच में हॉकी लेकर हाकी खेलने पहुंच गया क्रिकेट की पिच पर, वक्र।

रोको उसे।

पकड़ो उसे।

भाग खेल खत्म कर देगा वह।

रोकने वाले आई न रोक सके उस तूफान को –

अच्छा कर रहा था या बुरा यह वह स्वयं भी नहीं जानता था –

अम्पायर
खड़ूडा आज मे या तो तू इन किल्लियों के साथ खड़ा नहीं होगा या यह किल्लियां तेरे साथ नहीं होंगी --- खड़ूडा।

धड़ाक

धड़ाक

धड़ाक

शब्द नहीं दहकते आग के शोले उगले थे उसने अपने हलक से-

बोल तूने अम्पायर कृष्णकांत पर हमला क्यों किया ?

क्या बक रहा है छोकरे ? अरे बचाओ !

फिल्डर दौड़े बचाने हेतु-

लेकिन तब तक खुड्डा के सीने पर हाकी लेकर सवार हो चुका था वह अजेय।

खबरदार --- मेरे सिर पर खून सवार है --- अगर कोई मेरे पास फटका तो खुड्डा का सिर फोड़ दूंगा हाकी से।

बचाओSSS

ठिठक कर जहां के तहां जम गए सबके कदम।

खुड्डा का साक्षात --- यम का अवतार-सा लगा वह बालक।

बोल --- जवाब दे खुड्डा --- वर्ना

नहीं - नहीं --- बताता हूं बताता हूं।

भय के मारे मैदान में खुड्डा के नेत्रों में-

वुल्फ टीम के कैप्टन ने मुझे कहा था कि मैं ही इस बार अम्पायर बनूं मैच का-- और उनकी टीम को हर संभव तरीके से जीत का सेहरा पहनाऊं।

न जाने कहां से यह सब कुछ कर सकने की हिम्मत आ गई थी उस भोले बालक में।

...तो उन पर तूने गुंडों को खरीदकर हमला करवा दिया --- बोलो हां कि ना?

हां!

तब मैंने उसे एक नकाबपोश का पता बताया कि वह यह काम 1 लाख में कर देगा।

वोर्की अमीर घर का लड़का है --- वह मान गया।

वास्तव में मैं ही उसे नकाबपोश के रूप में मिलता था --- क्योंकि मुझे रुपयों का लालच आ गया था सोचा कुछ कृष्णकांत को देकर बाकी रख लूंगा। मगर कृष्णकांत जब नहीं माने तो---

तूने कृष्णकांत जैसे देवता स्वरूप आदमी के साथ अम्पायर होकर भी वैम्पायर वाला काम किया है··· उनके खून की एक-एक बूंद का बदला लूंगा मैं।

मगर हवा में उठी हॉकी को पकड़ लिया एक हाथ ने।

यह थे स्वयं अम्पायर कृष्णकांत।

आप?

हॉकी मुझे दो··· वक्र

नहीं सर···

खेलों के नाम पर अपराधियों जैसा काम करने वालों को क्यों बचाया सर···

क्यों नहीं तोड़ने दी उनके भी पांवों की हड्डियां मुझे।

उसे सजा तुम नहीं स्पोर्टस बोर्ड देगा वक्र।

फूट-फूटकर रो पड़ा उनके कदमों पर सिर रखकर··· वह-

चेहरा उठाया उसने अपना··· आंसुओं से तर हो चुका था जो-

मैं ऐसा खिलाड़ी नहीं बनना चाहता सर··· नहीं बनना चाहता, जो अम्पायरों के गलत निर्णय का शिकार हो जाएं।

बड़े ही प्यार और दुलार से रखा उसके सिर पर हाथ कृष्णकांत ने।

वक्र··· तभी तो मैं तुझे बनाना चाहता हूं आल राउंडर। ऐसा आल राउंडर जो न तो स्वयं शिकार होगा किसी गलत निर्णय का और न ही किसी अन्य खिलाड़ी की जिंदगी को गलत निर्णय का शिकार होने देगा··· बोलो करोगे न यह सब।

हां··· करूंगा सर··· जरूर करूंगा जो आप कहेंगे वह सब करूंगा।

यह थी कहानी मेरे पास आए··· पांच वर्ष पूर्व के, उस उदास से चेहरे मगर भड़के हुए स्वभाव वाले लड़के की। और उस दिन के बाद जब साइकिल का पंचर लगाने वाले हाथों में मैंने पकड़ा दिये खेल के सामान···

" तो, उन हाथों का जौहर देख्व!"

" हर खेल के प्रति उसकी जनून की हद तक रुचि देख्व!"

दिल में भरी लक्ष्य तक पहुंचने की अटूट इच्छा-शक्ति देख्व!

आज मैं गर्व से सिर उठाकर कह सकता हूं कि देख्वो, यह आ गया है मेरा आल राउंड डुर वक्र।